ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय, मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलानात्मक अध्ययन

उमा चतुर्वेदी

असि0 प्रोफेसर, बी 0एड 0 विभाग, सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी (बाँदा),(बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से सम्बद्ध) उ0प्र0

प्रस्तावना

राश्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षा को एक ओर जहाँ राश्ट्र की संस्कृति का संरक्षण करना है, वहीं संविधान के संकल्पों को पूरा करने में समर्थ नई पीढ़ी को तैयार करना है। शिक्षा की प्रमुख भूमिका है– जन भाक्ति का निर्माण। ऐसी जन भाक्ति जो विभिन्न दायित्वा का संभालने में समर्थ हो, देश की संस्कृति का सम्वर्द्धन करें, राश्ट्रीय चरित्र से परिपूर्ण हो तथा प्रतियोगिता के अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर आत्मविश्वास के साथ खड़ी हो सके।

राश्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 में कहा गया है कि समाज में अनिवार्य मूल्यों में निरन्तर कमी तथा बढ़त हुयी अराजकता के कारण पाठ्यक्रम में तथा तथा व्यवस्था में समयानुसार परिवर्तन आव" यक हो गया है, ताकि शिक्षा द्वारा सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों को विकसित किया जा सके।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोक–तन्त्रात्मक, धर्म–निरपेक्ष, समाजवादी गणराज्य बनाने के लिये उसके समस्त नागरिकों को न्याय, स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्व प्रदन किये जाने का उल्लेख है। यही हमारा राष्ट्रीय लक्ष्य है, यही हमारे राष्ट्र के मूल्य व उद्दश्य हैं।

इन राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये शिक्षा को एक सशक्त माध्यम माना गया है और यह यही भी है कि क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र ने अपनी अद्वितीय सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिये अपनी अलग राष्ट्रीय प्रणाली का विकास किया है। भारत में इस दिशा में प्रयास 1948 से प्रारम्भ हुये थे जब डॉ0 राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया था और सन् 1952 में श्री मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग गठित हुआ, इन आयोगों की रीपोर्ट आयी, क्रियान्वित भी हुई, किन्तु शिक्षा के समग्र रूप पर विचार डॉ0 कोठारी की अध्यक्षता वाले शिक्षा आयोग (1964–66) ने किया, जिसके आधार पर जुलाई 1968 में सर्वप्रथम स्वतन्त्र भारत की प्रथम राश्ट्रीय शिक्षा नीति की शाषण की गयी।

''शिक्षा गतिशील प्रक्रिया है'', अति प्राचीन समय से लेकर आज तथा शिक्षा अपने लम्बे समय में अनेक परिवर्तन देख चुकी हैं। ये परिवर्तन उसमें इसलिये है ताकि वह समय को आव" यकता को पूर्ण कर सके। जो विषेश समय में विषेश समाज के लिये आवश्यक है। जीवन के लक्ष्य का निर्धारण शिक्षा करती है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिये जीवन के विभिन्न पक्ष प्रयन्त करते हैं। शिक्षा भी सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण घटक है जो लक्ष्य प्राप्ति में महत्पूर्ण योगदान देती है। जीवन का लक्ष्य तथा शिक्षा का लक्ष्य न तो भिन्न हो सकता है और न ही शिक्षा का लक्ष्य जीवन से न्यून हो सकता है। जीवन के लक्ष्य से जीवन के मूल्यों का निर्धारण होता है और जीवन के मूल्य शिक्षा के उद्देश्यों में प्रतिबिम्बित होते हैं। शिक्षा के उद्देश्य वे साधन हैं जिनके द्वारा जीवन के मूल्यों तक पहुंचा जा सकता है।

बालक का व्यक्तित्व प्राकृतिक तथा वातावरणीय गुणों का उत्पाद होता है। प्राणी का जन्मजाता स्वभाव होता है कि वह वातावरण में होने वाली पारस्परिक क्रियाओं का निरीक्षण करता है। तथा उन्हीं व्यवहारों को ग्रहण करने की कोशिश करता है अतः शिक्षक एवं अभिभावक दोनों का ही कर्तव्य है कि वह छात्रों को उचित वातावरण तथा निर्देशों द्वारा सही दिशा प्रदान करें, क्योंकि बालक में चाहे जितनी भी प्रतिभा क्यों न हो

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

उचित अवसर, प्रोत्साहन प्ररेणा एंव मार्गदर्शन न मिलने के करण उसकी प्रतिभा कुठित हो जाती है। यदि शिक्षा छात्रों में ऐसे गुणों को विकसित करती है तो शिक्षक द्वारा किया गया प्रयास उसकी उपलब्धि के रूप में प्रकट होता है। यही विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है।

समस्या कथन :

''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् भाहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के आत्म–प्रत्यय, मूल्य एवं भौक्षिक उपलब्धि का तुलानात्मक अध्ययन''।

भाोध अध्ययन में प्रयुक्त प्रत्ययों का विवरण :

उच्चतर माध्यमिक स्तर :

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उच्चतर माध्यमिक स्तर से तात्पर्य अराजकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों के 11वों तथा 12वीं कक्षा से है।

ग्रामीण एंव शहरी विद्यार्थी :

प्रस्तुत शोध में ग्रामीण विद्यार्थियों से तात्पर्य उन विद्यार्थियों से है जो ग्रामीण क्षेत्र में स्थित अराजकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों में अध्ययनरत् है। भाहरी विद्यार्थियों से तात्पर्य उन विद्यार्थियों से है जो भाहरी क्षेत्र में स्थित अराजकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों में अध्ययनरत् है।

आत्म–प्रत्यय :

जीवन के विभिन्न स्वरूपों का वैज्ञानिक अवलोकन बाह्य या वस्तुनिश्ठ संदर्भो तक सीमित है। मनुष्यों के साथ, उसके आत्म अवलोकन व आत्म निरीक्षण की क्षमता के कारण, भिन्न रूप में, एक अन्य प्रकार की अवलोकन भी सम्भव है जिसमें व्यक्ति की आत्म–विशयक, अवधारणा का विश्लेशण कर, उसका अवलोकन या निरीक्षण किया जाता है।

शिक्षा के भाब्द कोश में आत्म–प्रत्यय ''उस प्रक्रिया का एक अंग है, जिसका प्रयोग व्यक्ति तुलनात्मक रूप से अपने गुणों को स्थाई और निश्चित रूप से जानने के लिये करता है।'' आत्म–प्रत्यय या आत्म–संरचना का विचार व्यक्ति की स्वयं के प्रति सुसंगठित सोच के लिये प्रयुक्त होता है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्यानुसार आत्म–प्रत्यय के अन्तर्गत निम्न विमाओं का सम्मिलित किया गया हैः–

- उपलब्धि की अनुभूति
- आत्म विश्वास की अनुभूति
- कार्य उपेक्षा
- हीनभावना की अनुभूति
- भावात्मक स्थायित्व

मूल्य :

'मूल्य' मनुष्य के सिद्धान्त अथवा व्यवहार के स्तर हैं। जीवन में क्या महत्वपूर्ण है इस बारे में मुनष्य का निर्णय 'मूल्य' कहलाता है मूल्य जीवन में स्वतः लागू किये गये नियम अथवा वे आचार संहिताएं हैं जो जीवन यात्रा को स्वच्छ विवेक के साथ सम्पन्न करने के लिये लागू किये जाते हैं।

आलपोर्ट के अनुसार ''मूल्य वे विश्वास हैं जिन पर व्यक्ति प्राथमिकता से कार्य करता है।

पिंलक ने मूल्यों की अनेक परिभाषाओं का अध्ययन करने के बाद कहा कि मूल्य वे मानक हैं जिनसे कार्य करने के लिये विभिन्न विकल्पों में व्यक्ति का चयन प्रभावित होता है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

प्रस्तुत भोध में निम्नलिखित पॉच मूल्यों को ही लिया गया है–

1. धार्मिक मूल्य
2. समाजिक मूल्य
3. प्रजातांत्रिक मूल्य
4. सौन्दर्यात्मक मूल्य
5. अर्थ मूल्य

प्रस्तावित शोध अध्ययन के उद्दश्य :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिय निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है।

1. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की भौक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है।

1. शहरी एंव ग्रामीण विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी एवं ग्रामीण के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तावित शोध अध्ययन की परिसीमायें :

प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल उत्तर प्रदेश के बॉदा एवं कर्वी जिले के अराजकीय सहायता प्राप्त विद्यालयों के कक्षा 11वीं के कला वर्ग के विद्यार्थियों तक सीमित रहेगा।

प्रस्तावित अनुसंधान विधि–

प्रस्तुत अनुसंधान में वर्णानात्मक सर्वेक्षण विधि (नॉर्मेर्टिव सर्वे मैथर्ड ऑफ रिसर्च) का प्रयोग किया जायेगा।

जनसंख्या–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 11वीं कक्षा के बॉदा एवं कर्वी जिले के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया जायेगा।

न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु यादृच्छिकीय न्यादर्श की लाटरी विधि का चयन न्यादर्श चयन हेतु किया जायेगा।

न्यादर्श वितरण–

शहरी विद्यार्थियों की संख्या			ग्रामीण विद्यार्थियों की संख्या			कुल योग
छात्र	छात्रायें	योग	छात्र	छात्रायें	योग	कुल योग
150	150	300	150	150	300	600

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर–

स्वतत्र चर– ग्रामीण एवं शहरी वातावरण

आश्रित चर– आत्म प्रत्यय, मूल्य, शैक्षिक उपलब्धि।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विभिन्न चरों के लिए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

1. आत्म प्रत्यय मापनी– डॉ0 आर0पी0 भटनागर द्वारा निर्मित
2. व्यक्तित्व मूल्य प्रश्नावली– शैरी एवं वर्मा द्वारा निर्मित
3. शैक्षिक उपलब्धि– छात्रों के बोर्ड परीक्षा के प्रतिशत अंक

शोध अध्ययन में प्रयुक्त विभिन्न सांख्यिकीय विधियाँ–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया जायेगा।

1. मध्यहान
2. मानक विचलन एवं
3. टी–परीक्षण

प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय, मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना अपेक्षित है। क्योंकि बालक का व्यक्तित्व प्राकृतिक तथा वातावरणीय गुणों का उत्पाद होता है। प्राणी का जन्मजात स्वभाव होता है कि वह वातावरण में होने वाली पारस्परिक क्रियाओं का निरीक्षण करता है तथा उन्हीं व्यवहारों को ग्रहण करने की कोशिश करता है। इसी कारण उनके बीच होने वाली पारस्परिक क्रियाओं एवं व्यवहारों का स्पष्ट प्रभाव प्रमुख रूप से उनके मूल्यों, आत्म प्रत्यय, शैक्षिक उपलब्धि आदि पर परिलक्षित होता है।

अतः इस शोध में माध्यम से यह जानकारी प्राप्त की जा सकेगी कि वह कैसा वातावरण है, जिसमें रहकर बालक का अधिकतम विकास हो सकता है। इस शोध अध्ययन के द्वारा यह ज्ञान भी प्राप्त हो सकेगा कि शहरी व ग्रामीण वातावरण में वे कौन–कौन से पक्ष हैं जो इन दोनों में अन्तर पैदा करते हैं। माता–पिता भी इस शोध के परिणामों से लाभ उठाकर अपने बच्चों की हीन भावना, नकारात्मक अभिवृत्ति, कम शैक्षिक उपलब्धि आदि समस्याओं को स्वस्थ्य पारिवारिक वातावरण उपलब्ध कराकर दूर कर सकेंगे। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शिक्षकों के लिए भी यह अध्ययन अति उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि सभी लोग, अध्यापक से केवल यही आशा करते हैं कि वह बालक को न केवल सूचनात्मक ज्ञान दें, बल्कि उसका यह भी दायित्व होता है कि वह बालक की व्यक्तित्व विभिन्नताओं को पहचान कर उसकी अर्न्तनिहित मानसिक व सामाजिक योग्यताओं कार विकास करें।

इस शोध कार्य के द्वारा यह भी देखा जा सकेगा कि ग्रामीण क्षेत्रों में कौन–कान सी सुविधा उपलब्ध करायी जाये जिससे कि ग्रामीण बालक भी शहरी बालकों की भाँति ही विकास कर सकें। अतः समाज कल्याण की योजना बनाते समय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण तथा अध्यापक सेवा नियमावली के निर्माण में यह शोध एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकेगा। स्पष्ट है कि प्रस्तुत अनुसंधान विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने, राष्ट्रीय मूल्यों का विकास करने तथा शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए क्या–क्या सुविधायें दी जाये। इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध अध्ययन अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकेगा।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

निष्कर्ष–

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण एवं अध्ययन के उपरान्त शोधार्थिनी ने अपने शोध अध्ययन का चुनाव किया। यद्यपिइ न चरों पर अनेक शोध कार्य किये गये परन्तु शोधार्थिनी का यह शोध अध्ययन अनेक सन्दर्भों में नवीन है। अभी तक हुए शोध कार्यों में ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थिया को लेकर बॉदा एवं कर्वी जिले के सन्दर्भ में कोई कार्य प्राप्त नहीं हुआ तथा न ही एक साथ तीन चरों आत्म–प्रत्यय, मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव देखा गया। इस प्रकार शोधार्थिनी का यह अध्ययन अपनी तरह का एक नवीन प्रयास है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

i. अरमिन महमूदो एण्ड निनगामा, सी0 (2009) रिलेशनशिप बिटवीन एडजस्टमेन्ट एण्ड एकेडमिक एचीवमेन्ट, साइकोलिनगुवा, वोल्यूम 39 (2) पृ0 182–186
ii. अवनिजा, के0के0 (1995) : द स्टडी ऑफ सर्टेन कोरिलेट्स ऑफ सेल्फ कान्सेप्ट एमंग स्टूडेंट्स ऑफ नवोदय विद्यालयाज। पी0एच0डी0 एजूकेशन, मैसूर यूनिवर्सिटी गाइड : डॉ0 एन0एन0 प्रहलाद, इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्ट, वाल्यूम। जनवरी 2001, पृ0–14
iii. उपाध्याय, एस0के0 एण्ड विक्रान्त (2004) ए स्टडी ऑफ इमोशनल स्टेवलिटी एण्ड एकेडमिक एचीवमेन्ट ऑफ ब्याज एण्ड गर्ल्स एट सैकन्डरी लेविल, इण्डियन जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, वोल्यूम–23, नं0–2, जुलाई–दिसम्बर 2004
iv. कपिल, एच0के0 ''अनुसंधान विधियाँ'' हरप्रसाद भार्गव, 41230 कचहरी घाट, आगरा–4, 1984, पे0–194
v. कॉल, लोकेश, 'मैथडोलॉजी ऑफ एजूकेशन रिसर्च'', विकास पब्लिशिंग हाऊस, प्राइवेट लिमिटेड, 1984

www.ijahms.com